IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मलिन बस्तियाँ : समस्याएँ एवं समाधान राँची शहर के संदर्भ में

प्रियंका कुशवाहा
यू. जी. सी. नेट, 2020
षोध छात्रा, राँची विष्वविद्यालय, राँची

मलिन बस्तियाँ मुख्यतः नगरीकरण की उपज हैं जो मौलिक आवश्यकताओं के साथ सालों भर रोजगार, षिक्षा, पर्यटन और अन्य वस्तुओं की आपूर्ति कर अधिकतम जनसंख्या के आकर्षण का केंद्र होता है। नगरों में रोजगार पाने के लिए आसपास के लोग प्रतिदिन आते हैं और दैनिक मजदूरी, छोटे–मोटे व्यवसाय, घरेलु नौकर, रिक्षा चालक आदि के रूप में काम करते हैं। अपने कार्यक्षेत्र में अभ्यस्त हो जाने पर कार्यस्थल के आसपास ही निम्न किराये के मकानों में अधिक–से–अधिक लोग एकसाथ रहने लगते हैं और रेल पटरियों, तालाब के किनारे, औद्योगिक केंद्र के आसपास सार्वजनिक भूमि में ही आवास का निर्माण करते हैं। इसतरह एक पूर्ण बस्ती का निर्माण हो जाता है, जिसे मलिन बस्ती कहते हैं। संकरी गलियाँ, षौचालय सुविधाओं, पेयजल, षिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं कमी के साथ एकल कमरे के गृह इन बस्तियों की विषेषतायें हैं।

राँची षहर राजधानी बनने से पूर्व प्राकृतिक हरियाली के लिए जानी जाती थी। वर्तमान समय में यह उद्योग, रोजगार, षिक्षा, पर्यटन और तीव्र बढ़ती जनसंख्या का प्रमुख केन्द्र है। पिछले वर्षों से इसके पृष्ठ प्रदेषों से लोग प्रतिदिन कार्यस्थल पर आते रहे हैं और सड़कों पर भीड़–भाड़ और दैनिक आवागमन में होनेवाली प्रतिदिन की समस्याओं से बचने के लिए आसपास ही रहने लगे हैं। जिससे मलिन बस्तियों का निर्माण तेजी से हो रहा है। कम आय के कारण इन बस्तियों के लोग कई समस्याओं से जूझ रहे हैं।

समाज के विकास के लिए मलिन बस्तियों की समस्या को गंभीरता से लिया जाना आवष्यक है। अतः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देष्य राँची षहर में तेजी से बढ़ती मलिन बस्तियों से संबंधित समस्याओं से समाज को अवगत कराना है और उनका निराकरण ढूँढना है।

कुंजी षब्द :– मलिन बस्ती, निम्न आय, गरीबी, बेरोजगारी, समस्या, समाधान।

परिचय

मानव इतिहास के प्रत्येक काल में षहर विभिन्न सभ्यता और संस्कृति का संगमस्थल रहा है। षहरों में उद्योग, व्यापार, रोजगार, षिक्षा, चिकित्सा, प्रषासन, परिवहन, मनोरंजन आदि सुविधाएं ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक पायी जाती हैं। षहर के नजदीकी ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार और अन्य नगरीय सुविधाओं को प्राप्त करने के उद्देष्य से बड़ी संख्या में जनसंख्या का पलायन षहर की ओर होता रहा है। राँची षहर भी इसका अपवाद नहीं है। वर्तमान समय में यह एक षहरी केन्द्र के रूप में उभरता हुआ क्षेत्र है जो रोजगार, तकनीकी षिक्षा और विविध औद्योगिक–आर्थिक कार्यों की ओर तेजी से बढ़ रहा है। लेकिन एक ओर जहाँ नगरीय सुविधाओं के कारण जीवनस्तर और रहन–सहन में सुधार आया है, वहीं दूसरी ओर केंद्र में भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ने तथा अकुषल श्रमिकों को कम आय प्राप्त होने से आवासीय समस्याएं उत्पन्न हुई हैं जो मलिन बस्ती की साध्य–असाध्य समस्याओं को बढ़ा रही है।

राजधानी बनने से पूर्व राँची प्राकृतिक हरियाली, उन्नत कृषि और पारंपरिक ग्रामीण संस्कृति के रूप में पहचानी जाती थी। लेकिन राजधानी बनते ही प्राथमिक क्रियाओं में तेजी से परिवर्तन ने प्रषासनिक, औद्योगिक, षैक्षणिक, रोजगार, रहन–सहन आदि के क्षेत्रों में बदलाव उत्पन्न किया है। प्रषासनिक क्षेत्र हो जाने के कारण रोजगार का विकल्प बढ़ा और एकाएक षहर की ओर पलायन ने केन्द्र में जनसंख्या के दबाव उत्पन्न हुआ। फलस्वरूप कुषल–अकुषल जनसंख्या के साथ एक निम्न आय वर्गीय जनसंख्या का तेजी से बसाव हुआ जिसे मलिन बस्ती कहते हैं। इस मलिन बस्ती का संकेन्द्रण मुख्य केन्द्र से लेकर नगर के लगभग सभी वार्डों में है। बी. एस. यू. पी. के प्राथमिक सर्वेक्षण के अनुसार राँची षहर की 10.07 लाख जनसंख्या में से 3 लाख जनसंख्या झुग्गियों में निवास करती है। जिसमें 20 प्रतिषत् घरों में षौचालय सुविधा नहीं है। इसके सर्वेक्षण के अनुसार षहर के 10 वार्डों (संख्या–4, 5, 6, 7, 8, 49, 50, 51, 52, 53) में मलिन बस्तियों का फैलाव तीव्रता से हुआ है। यहाँ की मलिन जनसंख्या वर्तमान में दिन–प्रतिदिन की बुनियादी

सुविधाओं को ही पाने में लगी है जिससे ये लोग अपनी बुनियादी जरूरत आवासीय, स्वास्थ्य, षिक्षा आदि को पूरा नहीं कर पाते हैं। इसप्रकार उनका सामाजिक, आर्थिक और षैक्षिक विकास नहीं हो पा रहा है।

अध्ययन क्षेत्र

राँची षहर भारत देष के 28वें राज्य झारखण्ड की राजधानी राँची का केंद्रीय भाग है जो 15 नवंबर, 2000 को एक राजधानी के रूप में स्वीकृत किया गया । इसका अक्षांषीय विस्तार $23^0$14′35′′उत्तरी अक्षांष से $23^0$25′40′′उत्तरी अक्षांष तथा $85^0$15′12′′ पूर्वी देषांतर से $85^0$24′10′′ पूर्वी देषांतर के बीच स्थित है। इसकी समुद्रतल से ऊँचाई 651 मीटर है। 2011 की जनगणना के अनुसार राँची षहर की जनसंख्या 10,73,427 है जिसमें बी. एस. यू. पी. के अनुसार 3,00,000 के लगभग जनसंख्या मलिन बस्ती में निवास करती है तथा राँची नगर निगम से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार 125.92 किलोमीटर सार्वजनिक भूमि पर 3493 की संख्या में मलिन बस्ती का विस्तार है।

अध्ययन का उद्देष्य

वर्तमान समय में मलिन बस्ती राँची षहर में अन्य सभी वर्गों की तरह समाज का अभिन्न अंग है। यहाँ की मलिन जनसंख्या दिन–प्रतिदिन की उन प्रकार्यों को करते हैं जो कार्य विषेषीकृत नहीं हाते हैं। ये लोग एक तरह से सहायक के रूप में कार्य करते हैं। अतः राँची नगर में होनेवाले कार्यों को सुचारू रूप से संचालन के लिए इस तबके (मलिन बस्ती) के लोगों की गहन समस्याओं का गहन अध्ययन और उचित समाधान आवष्यक है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देष्य है–राँची षहर में मलिन बस्ती से संबंधित क्षेत्रों को चिन्हित करना, मलिन बस्ती के विकास के कारणों की जाँच करना, उनकी समस्याओं का गहन अध्ययन करना। साथ–ही सरकारी सुविधाओं और योजनाओं से मिलनेवाले लाभ से संबंधित होनेवाली गड़बड़ी की पहचान करना और इसके समाधान हेतु उचित सुझाव देना।

विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्रीय सर्वेक्षण और द्वितीयक आँकड़ों के संग्रहण और विष्लेषण पर आधारित है। इसमें 2001 और 2011 के जनगणना आँकड़ों के साथ राँची नगर निगम द्वारा प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। षहर के 53 वार्ड में फैले मलिन बस्तियों के आँकडों को आधार माना गया है।

मलिन बस्ती का आषय

भारत की जनगणना, 2001 ने मलिन बस्ती को इसप्रकार परिभाषित किया हैः–

- किसी भी अधिनियम के तहत राज्य/स्थानीय सरकार और केंद्रषासित प्रदेष प्रषासन द्वारा मलिन बस्ती के रूप में अधिसूचित सभी क्षेत्र
- राज्य/स्थानीय सरकार और केंद्रषासित प्रदेष प्रषासन द्वारा मलिन बस्ती के रूप में मान्यता प्राप्त सभी क्षेत्र जिन्हें किसी भी अधिनियम के तहत औपचारिक रूप से कलंक के रूप में अधिसूचित नहीं किया गया है
- कम से कम 300 आबादी या लगभग 66–70 घरों का एक सघन क्षेत्र, जो खराब ढंग से निर्मित भीड़भाड़ वाले मकानों में हैं, आमतौर पर अस्वास्थ्यकर वातावरण में अपर्याप्त बुनियादी ढ़ाँचे और उचित स्वच्छता तथा पीने के पानी की सुविधाओं के कमी के साथ रहते हैं।

राँची षहर में मलिन बस्ती

विकास मानव की सतत् और परिवर्तनषील प्रकृति है जो प्रारंभ में आधारभूत आवष्यकताओं–रोटी, कपड़ा और मकान से प्रारंभ होकर उच्च प्राविधिकी ज्ञान के चरम लक्ष्य तक पहुँचने में प्रयासरत रहती है। जिसमें कुछ लोग आवष्यकता पूर्ति हेतु अपनी कार्य कुषलता और बौद्धिक क्षमता के अनुसार विकास के क्षेत्र में आगे बढ़ते चले जाते हैं और जो लोग विकास की दौड़ में पीछे रह जाते हैं, वे निम्न आय के कारण षहरों की ओर जीविका की तलाष में षहर की ओर पलायन करते हैं और आसपास के क्षेत्रों में अनियोजित मलिन बस्ती का निर्माण करते हैं। राँची षहर भी इसका अपवाद नहीं है।

राँची षहर में मलिन बस्तियाँ इसके षहरी पर्यावरण का हिस्सा है और इसकी पहचान लोगों की बहुत भीड़, सफाई और स्वास्थ्य सुविधाओं में कमी, पर्याप्त पेयजल का न होना और कच्चे मकानों में निवास आदि के रूप में की जा सकती है।

2001 की जनगणना के अनुसार राँची षहर की कुल जनसंख्या और मलिन बस्ती की जनसंख्या का तुलनात्मक विवरण इसप्रकार हैः–

तालिका संख्या – 1.1

विवरण	मलिन जनसंख्या
कुल जनसंख्या	74,692
पुरूष जनसंख्या	38,827
महिला जनसंख्या	35865
अनुसूचित जाति जनसंख्या	4062
अनुसूचित जनजाति जनसंख्या	25,921

स्रोत :– भारतीय जनगणना, 2001

तालिका संख्या–1.2 से स्पष्ट होता है कि राँची नगर निगम, 2001 के अनुसार षहर में मलिन बस्तियों में निवास करनेवालों की की कुल जनसंख्या 2,37,191 है और घरों की संख्या 35,037 है। जिसमें अनुसूचित जनजातियों के गृहस्थी की संख्या 19,092 है। साथ ही अनुसूचित जातियों के गृहस्थियों की संख्या 6,889 है और अन्य गृहस्थियों की संख्या 9,056 है। इसप्रकार प्रत्येक घरों में व्यक्तियों की औसत संख्या 6.7 है। प्रत्येक घरों में रहनेवाले लोगों की औसत संख्या नगर के अनुसार अधिक है क्योंकि मलिन बस्ती के लोग छोटे आकार के कमरों में अधिक लोग रहते हैं और छोटे कमरों में 6–7 लोागों का रहना अस्वथ्यकर है।

तालिका संख्या – 1.2

2018 के अनुसार राँची षहर में मलिन बस्ती का विकास पॉकेट के रूप में

स्थान	कुल जनसंख्या	अनुसूचि जनजाति गृहस्थी	अनुसूचित जाति गृहस्थी	अन्य गृहस्थी	कुल गृहस्थी
चंदवे,काँके रोड	1463	113	57	39	209
कटहरगोंदा, हातमा बस्ती, काँके रोड	2143	217	55	57	329
तिकिलटोला काँके रोड	539	57	11	9	77
एदलहातु मोरहाबादी	4403	427	53	149	629
हातमा बस्ती, काँके रोड	3129	247	92	108	447
मोरहाबादी (बैंक ऑफ इंडियन ऑक्सिजन)	5901	651	89	103	843
चड़री	1155	95	55	15	165
दिबडीह	2065	185	65	45	295
हरिजन टोला तीसरी गली	2079	96	104	97	297
न्यू चड़री बस्ती	1372	149	27	20	196
आर.आर.डी.ए ष्हीद चौक राजभवन के सामने	541	–	–	–	0
हेसल बस्ती	8458	704	206	297	1207
भूइँया टोली, काँटा टोली	4851	99	505	89	693
मधुकम कोटला टोली	4179	203	96	298	597
मधुकम पुरानी बस्ती	4683	359	49	261	669
हरमू बस्ती	7413	709	49	301	1059
हरमू रोड, हरिजन टोला	3451	3	389	101	493
टंगरी टोली	3871	353	49	151	553
कडरू बस्ती	10408	603	204	680	1487
कडरू पुल टोली, रेलवे स्टेषन के पास	2793	251	53	95	399
पुरानी राँची, आदिवासी एरिया	6223	608	56	225	889
गंगु टोली	4179	447	53	97	597
सिरम टोली	9092	903	185	208	1296

डोम टोली कर्बला टेंक के पूरब मे	6895	43	702	240	985
कोनका, दिपू टोली	6272	507	289	100	896
हरिजन बस्ती	3458	96	349	49	494
कचड़ापाड़ा इस्लाम नगर पत्थलकुदवा	11408	385	715	387	1487
लेहराकोचा	2443	105	197	47	349
कोकरगढ़ा गली	2415	195	275	75	545
नगड़ा टोली	11823	1095	205	389	1689
करम टोली	7644	695	95	57	299
बरियातु बस्ती	9072	377	109	810	1296
आर.के.मिषन मोरहाबादी मस्जिद के सामने	2093	147	95	57	299
हरिजन बस्ती काँटा टोली	10444	957	45	90	1092
लोवाडीह बस्ती	7616	685	205	308	1198
लाह फेक्टरी रोड षराबखाना से नदी तक	3451	93	57	343	493
टमटम टोली 1 और 2	10129	1113	115	219	1447
चनपुर टोली	3486	399	51	48	198
खादगढ़ा काँटा टोली	2347				0
कटहर टोली	5243	445	75	229	749
नायक मोहल्ला चुटिया	3488	51	223		274
बड़ा घाघरा	20951	2631	91	271	2993
कुसई मोहल्ला	4263	515	55	39	609
बरिक टोली	2051	289		4	293
डोरण्डा डोम टोली	1379	—	156	41	197
कसाई मोहल्ला	3486	—	—	498	498
मोची मोहल्ल	1736	—	208	40	248
हेतु बस्ती	6993	29	49	921	999
हिनू बस्ती	6244	761	26	105	892
हुन्डरू बस्ती	4851	196	29	468	693
कचनार टोली	2758	—	—	394	394
हेसाग बस्ती	4879	—	89	608	697
कुल	237191	19092	6889	9056	35037

स्रोत :— राँची नगर निगम, 2011

मलिन जनसंख्या का वृद्धि दर

2001 की जनगाणना के आँकडों के अनुसार, राँची षहर की जनसंख्या का 74,692 व्यक्ति मलिन बस्ती में रहती थी जो कुल नगरीय जो कुल नगरीय जनसंख्या (8,47,093 व्यक्ति) का 8.82 प्रतिषत् थी। जबकि 2011 में यह बढ़कर 77,602 व्यक्ति हो गयी जो कुल षहरी जनसंख्या(10,73,427 व्यक्ति) का 7.23 प्रतिषत् है। इसप्रकार राँची षहर में घटती दर से बढ़ती मलिन जनसंख्या देखी जा रही है। पिछले 10 सालों (2001 से 2011 के बीच) में इनकी जनसंख्या में 2910 व्यक्ति की बढ़ोंतरी हुई है और प्रतिषत् दर में 0.59 प्रतिषत् की गिरावट हुई है। यह गिरावट सरकारी और गैर सरकारी संगठनों द्वारा षिक्षा और जागरूकता के कारण हुआ है।

तालिका संख्या — 1.3

मलिन जनसंख्या वृद्धि(2001—2011)

वर्ष	कुल जनसंख्या	मलिन जनसंख्या	प्रतिषत्
2001	847093	74692	8.82
2011	1073427	77602	7.23

स्रोत :— राँची नगर निगम, 2011

सरकारी भूमि पर मलिन बस्ती

राँची षहर में सरकारी भूमि पर मलिन बस्ती का निर्माण आरंभ से ही किया जा रहा है। यहाँ वर्तमान में 55 वार्डे में सरकारी भूमि पर निर्मित होनवाले मलिन बस्तियों का विवरण उसके क्षेत्रफल एवं गृहों की संख्या के अनुसार दिया जा रहा जिससे स्पष्ट हो जाएगा कि मलिन जनसंख्या का सर्वाधिक जमाव केंद्र में न होकर बाहर की ओर अधिक है।

मलिन जनसंख्या वृद्धि

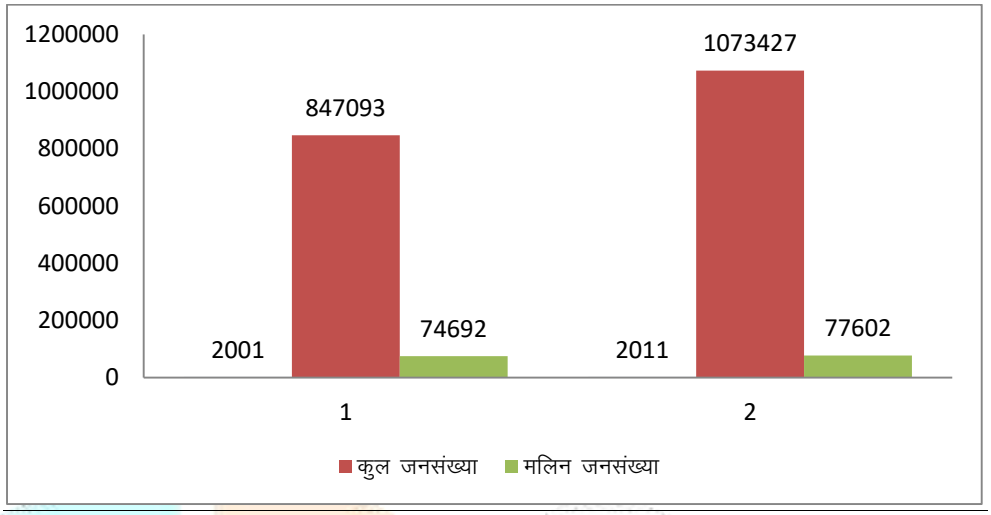

आरेख संख्या –1

मानचित्र संख्या–1.1 में राँची नगर में वार्ड के अनुसार मलिन बस्तियों का विस्तार दिखाया गया है। मानचित्र को देखकर ज्ञात किया जा सकता है कि मलिन जनसंख्या का विस्तार नगर के केंद्र में नगर के बाहर की ओर की अपेक्षा कम है। इनका सर्वाधिक विस्तार राँची नगर के उत्तर और दक्षिण में है।

तालिका संख्या – 1.4 आँकड़ा के अनुसार षहर में मलिन बस्ती का विकास औसत रूप से केन्द्र से 4.4 किलोमीटर की दूरी पर हुआ है। यहाँ सरकारी भूमि पर सर्वाधिक संख्या में निर्माण वार्ड न. 16 में 8.69 किलोमीटर भूमि पर 1243 गृह निर्मित हैं और सबसे कम मलिन बस्ती का निर्माण वार्ड संख्या 51 के प्रेस कॉलोनी में 23 गृह 0.2 किलोमीटर क्षेत्र पर फैला है।

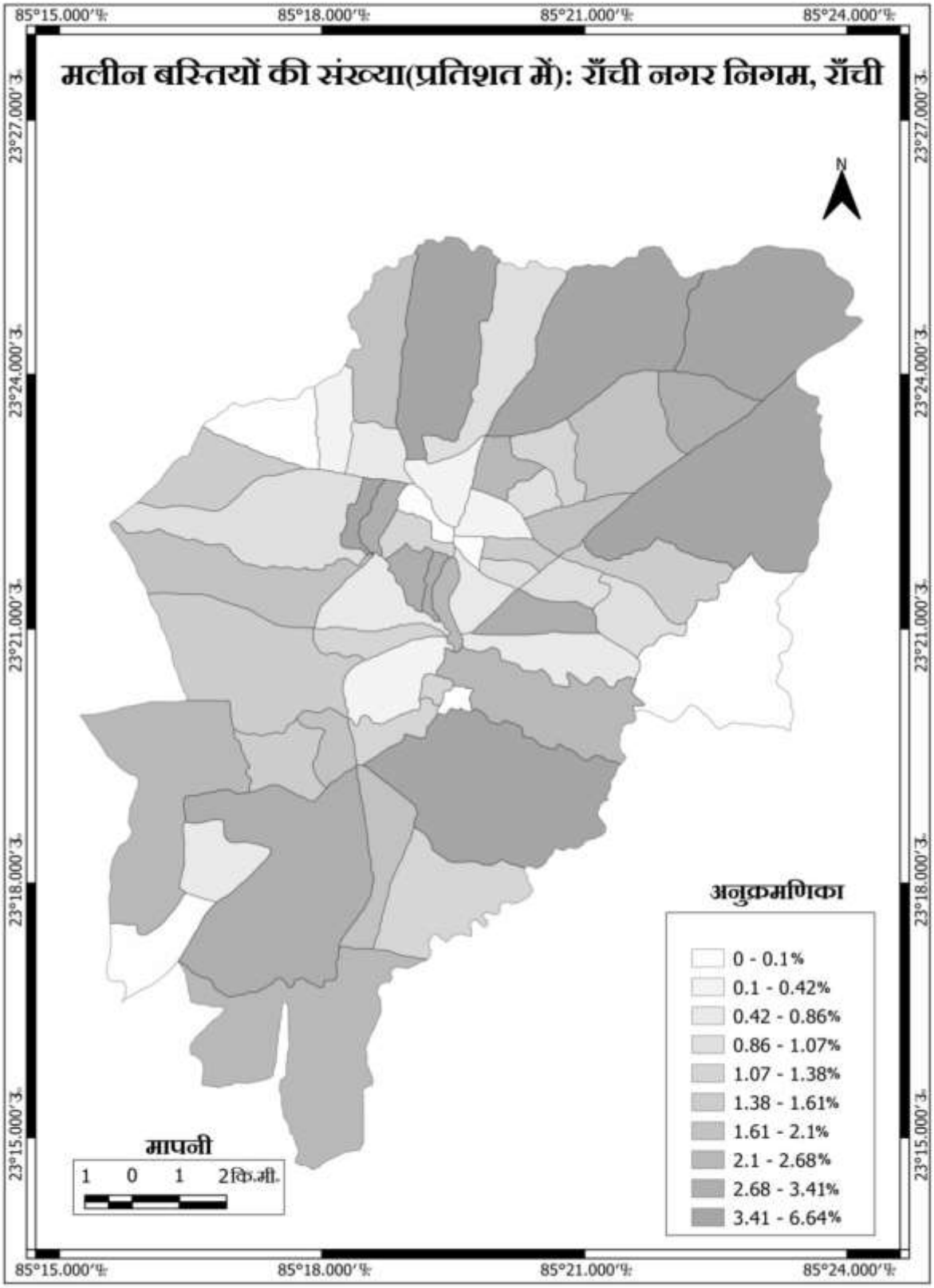
मलीन बस्तियों की संख्या(प्रतिशत में): राँची नगर निगम, राँची
85°15.000′पू
85°18.000′पू
85°21.000′पू
85°24.000′पू
23°27.000′उ
23°24.000′उ
23°21.000′उ
23°18.000′उ
23°15.000′उ
N
अनुक्रमणिका
0 - 0.1%
0.1 - 0.42%
0.42 - 0.86%
0.86 - 1.07%
1.07 - 1.38%
1.38 - 1.61%
1.61 - 2.1%
2.1 - 2.68%
2.68 - 3.41%
3.41 - 6.64%
मापनी
1 0 1 2कि.मी.

मानचित्र संख्या – 1

तालिका संख्या – 1.4

सरकारी भूमि पर निर्मित गृहस्थियों की संख्या

सरकारी भूमि पर मलिन बस्ती			वार्ड संख्या	गृहों की संख्या कुल	कुल क्षेत्रफल
मलिन बस्ती का नाम	गृहों की संख्या	क्षेत्रफल (किलोमीटर में)			
हथिया गोंडा	38	0.8	1	38	0.8
न्यू मोराबादी	31	0.38	3	65	0.68
मोराबादी दुर्गा मंदिर	16	0.3			
जोगा पहाड़	18	–			
बिरसा बस स्टैंड	60	1.2	13	60	1.2
डोम टोली	461	0.5	16	1243	8.69
डोम टोली–2	29	0.6			
इस्लाम नगर	697	7			
हरिजन कॉलोनी	57	0.59			
हरिजन बस्ती	50	0.7	32	50	0.7
सुन्दर नगर	44	1.1	35	44	1.1
इलाची नगर	187	27	37	187	27
केदार कुंज	4	1.71	45	110	2.61
हिडिया बस्ती	89	0.7			
गाँधी नगर	17	0.2			
डोरंडा बाजार	70	1.22	46	70	1.22
नेपाली बस्ती	61	8	50	61	8
प्रेस कॉलोनी	23	0.2	51	23	0.2
मनी टोला	122	1.3	52	155	4.1
गंगा खटाल	33	2.8			
दुर्गा मंदिर, लोहरा कोच	116	14	53	512	19.1
गंदा टोली	108	2.6			
दीपा टोली	288	2.5			
पिठिया टोली	288	4.9	55	874	56.8
गनियोर टोली	148	8.7			
गिरिजा टोली	128	8.1			
सतरंजी	310	30			
कुल	3493	125.50	27	3493	125.50

स्रोतः– राँची नगर निगम, राँची, 2018

मलिन बस्ती के विकास के कारण और उत्पन्न समस्याएं

मलिन बस्ती का विकास अचानक न होकर एक सतत् प्रक्रिया के तहत होता होता है। राँची षहर में मलिन बस्ती के विकास के बहुत से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण है जिससे ग्रसित लोग अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए षहर की ओर पलायन करते हैं और षहर में रोजगार की जटिलता में फँसकर रह जाते हैं। अंततः उनकी आर्थिक स्थिति और खराब होती जाती है। इसप्रकार ये लोग स्थायी निवास बनाने में अक्षम हो जाते हैं एवं सार्वजनिक भूमि या अनुप्योगी भूमि में ही अस्थायी बस्ती का निर्माण कर लेते हैं।

मलिन बस्तियों के लोग षहर की महंगी भूमि कारण कहीं भी अपनी बस्ती का निर्माण करते हैं और ये भूमि की उच्चावच का भी ध्यान नहीं रखते जिससे वर्षा के दिनों में जलजमाव की समस्या उत्पन्न हो जाती है। जलजमाव के कारण ये बस्तियाँ और भी गंदी हो जाती हैं। इसप्रकार राँची षहर की मलिन बस्तियों के निम्नलिखित कारण और समस्याएं हैंः–

- **प्रवास** :– किसी स्थान विषेष की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं से प्रभावित होकर अपने निवास स्थान से दैनिक, मौसमी या वार्षिक पलायन को प्रवास कहते हैं। राँची के आसपास में प्रवास के कई कारण हैं। यहाँ की कृषि मानसून पर आधारित होने के कारण अतिरिक्त समय में किसान मजदूरी करने के लिए षहर की ओर पलायन कर जाते हैं। भूमिहीन किसान भी गाँव में रोजगार न मिलने की स्थिति में नजदीकी षहर की ओर प्रवास करते हैं और उन कार्यों को करते हैं जिन कार्यों को करने के लिए किसी विषेष डिग्री की आवष्यकता नहीं होती।

  कार्यों में दक्ष न होने के कारण इन्हें निम्न आय प्राप्त होती है जिससे ये लोग अस्थायी झोपड़ी में रहकर असह्य कठिनाईयों को जन्म देते हैं। इसके अतिरिक्त षिक्षा, स्वास्थ्य, रूढ़िवादी परंपराएं और प्राकृतिक प्रकोप भी प्रवास को बढ़ावा देता है जो षहर में मलिन बस्ती को बढ़ाने में सक्रिय है।

- **आवासीय समस्याएंः** – आवासीय समस्याएं मलिन बस्ती की सबसे बड़ी समस्या है। इनके कच्चे मकानों में कमरों की कमी, बच्चों की पढ़ाई में असुविधा, बीमारियों के संक्रमण का खतरा अधिक रहता है। एक या दो ही कमरे में पूरे परिवार का असुविधापूर्ण बन जाता है।
- **जनसंख्या दबाव** :– क्षेत्र विषेष जब अधिक जनसंख्या का संकेन्द्रण हो जाता है तो उस भूमि में जनसंख्या की वहन क्षमता कम हो जाती है जिसे जनसंख्या दबाव कहते हैं। इसके कारण आवासीय भूमि के अभाव में कम क्षेत्र में ही निम्न गुणवत्ता युक्त मकानों का निर्माण हाता है।
- **षिक्षा का अभाव** :– षहर से दूर के ग्रामीण क्षेत्रों में षिक्षा की उत्तम व्यवस्था नहीं हो पाने के कारण निम्न आय हाते हुए भी कुछ लोग षहर में ही रहना पसंद करते हैं और मकानों का निर्माण करते हैं। ऐसे लोग गतिषील प्रवृति के होते हैं और अपनी धीरे–धीरे अपनी स्थिति में सुधार करने में सक्षम हो जाते हैं।

  दूसरी ओर मलिन बस्तियों में अषिक्षित लोग भी होते हैं जिनका उद्देष्य सिर्फ किसी तरह पेट पालना होता है। ये लोग साफ–सफाई में भी ध्यान नहीं देते हैं जिससे गंदगी के साथ–साथ कई बीमारियों से भी ग्रसित हो जाते हैं।
- **रूढ़िवादी परंपराएं** :– प्रायः ग्रामीण क्षेत्रों में परंपराओं और रूढ़ियों का कुछ ज्यादा ही प्रकोप होता है जिससे बंधकर रहना सबके लिए कठिन हो जाता है। अतः इसतरह के गतिषील लोग षहर की और पलायन तो करते हैं लेकिन षहर की जटिलताओं से समायोजन नहीं कर पाने की स्थिति में एक अलग तबके के रूप में जीवन जीने लगते हैं।

  दूसरी ओर कुछ मलिन जनसंख्या षहर में अपना मकान तो बना लेते हैं लेकिन पौराणिक परंपराओं को मानते रहने के कारण उन्हीं कार्यों को बढ़ावा देते हैं जो समाज के उत्थान में बाधक हैं(कम उम्र में लड़कियों का विवाह, पारिश्रमिक बढ़ाने के उद्देष्य से जनसंख्या को बढ़ावा देना)।
- **स्वास्थ्य** :– राँची षहर की मलिन बस्तियों में रहनेवाले लोग निम्न आय, जलनिकास की अनुचित व्यवस्था, षौचालय सुविधा की कमी, कच्चे और गंदे मकान के कारण कई बीमारियों से ग्रसित होते हैं। 2001 के आँकड़ों के अनुसार 34 प्रतिषत् मलिन जनसंख्या के पास षौचालय नहीं थी और 62 प्रतिषत् लोग कच्चे मकानों में रहते थे। निम्न आय के कारण बीमारियों से ग्रसित लोग उचित इलाज नहीं करवा पाते और उनका संक्रमण बढ़ता जाता है। इसप्रकार स्वास्थ्य समस्याएं पूरे समाज के लिए खतरनाक हो सकता है।
- **भुखमरी और कुपोषण** :– निम्न और परिवार के लोगों की संख्या अधिक होने के कारण इन्हें सम्पूर्ण भोजन नहीं मिल पाता है। जिससे भुखमरी और कुपोषण मलिन बस्ती की आम समस्या बन जाती है।
- **अपराध में वृद्धि** :– नियमित भोजन नहीं मिल पाने के कारण मलिन बस्ती के लोगों को पेट की चिंता हमेषा रहती है इस स्थिति में काम न मिलने पर मलिन बस्ती के लोग अपराध की ओर अग्रसर होते हैं।

मलिन बस्ती की समस्याओं का समाधान

मलिन बस्ती षहरी क्षेत्र का ही एक हिस्सा है। इसलिए समाज का अभिन्न अंग भी है। इनकी दिन–प्रतिदिन की बढ़ती समस्याओं के समाधान के लिए सबसे पहले मौलिक जरूरतों के साथ आसपास की साफ–सफाई पर ध्यान देना होगा, सरकार द्वारा मिलनेवाले सुविधाओं तक इनकी पहुँच को सुनिष्चित करना भी आवष्यक है।

- **षिक्षा का प्रसार** :– मलिन बस्ती के बच्चों को निम्न आयु से ही षिक्षा की ओर अग्रसर होने के लिए प्ररणा देना चाहिए। ताकि अपने बस्ती के माहौल से बाहर निकल सके। इन बच्चों के लिए निवासस्थल के आसपास ही आवासीय विद्यालयों की व्यवस्था की जानी चाहिए जहाँ ये अपनी गंदी बसितियों और गरीबी से स्वतंत्र होकर सामान्य विद्यार्थियों की भाँति षिक्षा प्राप्त कर सके।
- **जागरूकता का प्रसार** :– मलिन बस्तियों में जागरूकता की आवष्यकता उन लोगों का है जो युवा, प्रौढ़ या बच्चों के अभिभावक हैं। स्वास्थ्य, षिक्षा, सरकारी सुविधाओं के प्रति थोड़ी सी सावधानी या जागरूकता उनकी भावी पीढ़ी को दिन–प्रतिदिन की समस्याओं से छुटकारा दिला सकता है। वर्तमान में एन. बी. जे. के (नव भारत जागृति केन्द्र) जैसी अनेक संस्थाएं राँची षहर में विभिन्न मलिन बस्तियों का सर्वेक्षण कर लोगों को जागरूक कर रहीं हैं।
- **सरकारी सुविधाओं की लोगों तक पहुँच** :– वर्तमान में सर्व षिक्षा अभियान, प्रधानमंत्री आवास योजना और सुलभ षौचालय जैसी योजनाएं कार्यरत हैं लेकिन सही जानकारी और षिक्षा के अभाव में सरकार द्वारा दी जानेवाली राषि के बदले उन्हें बड़ी रकम चुकानी पड़ रही है। यह गड़बड़ी बिचौलियों द्वारा की जा रही है। अतः इन बिचौलियों की समाप्ति कर सरकारी सुविधाओं तक लोगों की पँहुच को सुनिष्चित किया जाना आवष्यक है।
- **साप्ताहिक बैठक :–** चिन्हित किए गए मलिन बस्तियों में उनकी समस्याओं के निदान हेतु साप्ताहिक रूप से बैठक कराया जाना अनिवार्य है ताकि इनके लिए जो भी कार्य हो, समस्या और माँग के अनुरूप हो।

निष्कर्ष :– उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मलिन बस्ती के लोग असुविधापूर्ण और गंदी बस्तियों में रहते हैं। उनकी सभी समस्याएं बस्ती के साथ–साथ आसपास के षहरी वातावरण और उसके विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही हैं। मलिन बस्ती नगर का अभिन्न अंग है। अतः मलिन बस्ती के विकास और नगरीकरण में सीधा संबंध पाया जाता है। किसी भी षहर की रौनकता भवनों की आकारिकी में होती है। मलिन बस्तियों का अस्वस्थ वातावरण के कारण षहर की आकारिकी विकृत सी होती जा रही है और वहाँ निवास करनेवाली जनसंख्या का बौद्धिक और षारीरिक विकास नकारात्मक रूप से प्रभावित हो रहा है। अतः मलिन बस्ती की समस्याओं को कम करने के उपाय करना मानव समाज का प्रमुख विषय है।

संदर्भ सूची

1. जवाहर लाल नेहरू नैषनल अर्बन रेनेवल मिषन, जनवरी, 2017
2. मौर्य, एस. डी. (2015) : *अधिवास भूगोल,* षारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. मौर्य, एस. डी. (2013) : *जनसंख्या भूगोल,* षारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. आर. एन. सिंह और एस. डी. मौर्य (2013) *नगरीय भूगोल* षारदापुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. सिंह. प्रदीप कुमार, (2013) : लैंड यूज एंड अर्बन स्प्राउल ऑफ राँची सिटी।
6. सिंह आर. एन. और मौर्य एस. डी. (2013) : *नगरीय भूगोल,* षारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
7. नैषनल अर्बन हेल्थ मिषन, मई, 2013।
8. झारखण्ड स्टेट पॉल्यूषन कंट्रोल बोर्ड, (2020) : कॉम्प्रीहेन्सिव क्लीन एयर एक्षन प्लान।